THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

“ एक सम्पूर्ण केन्द्र की खोज”
Looking for a perfect focus

Author: Daniel Leuschner

The Herald of Christian Science (Spanish Edition) February, 2012

मैं पिछले तीन वर्षों से विद्यालय में फिल्में बनाने के कोर्स पढ़ रहा था। मैंने इन कक्षाओं में इतना आनन्द अनुभव किया है कि मैं फिल्म बनाने को आने वाले समय में एक कैरियर के तौर पर अपनाने के लिए गंभीरता से विचार कर रहा हूँ। मैंने बहुत सी चीजों को सीखा है और अभी भी सीख रहा हूँ जिनमें मैं आनन्द अनुभव करता हूँ, सिनेमा इतिहास में महान फिल्में बनाए जाने के अध्ययन से लेकर, एक फिल्म के द्वारा विशिष्ट संदेश पहुँचाने तक। परन्तु जो मुझे सचमुच में पसंद है एक ही दृश्य को फिल्माने के अलग–अलग ढगों को ढूढँना। और यह भी देखना कि जब फिल्माने के बारे में निर्णय लिया जाता है, किसी निश्चित दृष्टिकोण का चुनाव देखने वाले के विषय के प्रभाव को कितना बदल सकता है।

उदाहरण के तौर पर, एक व्यक्ति को देखने वालों की आँख के स्तर के नीचे के कोण से फिल्माने पर उसकी शक्तिप्रद अवस्था का पता चलता है, जबकि इसका उल्टा प्रभाव प्राप्त किया जा सकता है जब उनकी आँख के स्तर के ऊपर से फिल्माया जाए। और, कैमरे को सीधा रखने की बजाए कुछ टेढ़ा रखने से, देखने वालों को एकदम से बैचेनी या घबराहट का अहसास होता है। इस आखिरी तकनीक को डच टिल्ट कहते हैं।

मैं सोचता हूँ हम भी अपने चुने हुए दृष्टि कोण के आधार पर अपने जीवन में होने वाली घटनाओं को परिभाषित करते हैं। हमारी अपेक्षाएं तय करती है कि हमारे अनुभव की फिल्म कैसी होगी और हमारे पास दिव्य मन के सभी विचार है जिसने हमें हर एक गलत पद्धति को ठीक करने के लिए तथा अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए उत्पन्न किया है।

पिछली गर्मियों में मैंने अकेले रोमानिया से यूनाईटड स्टेट्स में लॉस एंजलिस में कैलीफोर्निया युनिवर्सिटी में फिल्म रंगरूट कैंप में भाग लेने के लिए सफर किया। हवाई जहाज में लम्बा सफर पहले से ही अपने आप में चुनौतिपूर्ण दिखाई दे रहा था। साथ ही हॉलीवुड के बहुत नज़दीक तथा एक विख्यात युनिवर्सिटी में अध्ययन में भाग लेने के विचार ने मुझे थोड़ा असुरक्षित महसूस करवाया। मैंने यह सोचकर उससे भी ज्यादा असुरक्षित महसूस किया कि हर कोई मुझ से ज्यादा समझदार होगा और मैं खुद ही अपना मजाक उड़वा सकता हूँ, और इसने मुझे इतने बड़े सुअवसर में आनन्द मनाने से वंचित कर दिया। मैंने अनुमान लगाया कि मेरा अपना

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

दृष्टिकोण थोड़ा सा विकृत था। जब मैंने दूसरे दृष्टिकोण को चुना, यह विश्वास करते हुए कि हर एक चीज़ अपनी सही जगह पर थी तथा मेरे गुण दिव्य ज्ञान जिसने मुझे बनाया था, के प्रतिरूप हैं, मेरा सारा सफर समन्वित हो गया और मुझे अध्ययन में आनन्द मनाने तथा अपने ज्ञान का उपयोग करने के लिए आज़ादी तथा सुरक्षा दी, मेरी दक्षताओं को पूर्णतया दर्शाते हुए।

इस दृष्टिकोण के बदलाव को क्रिश्चियन साँयस में प्रार्थना कहते हैं, जिसमें हम स्थिति को उस तरह देखने की कोशिश करते हैं जिस तरह **परमेश्वर**, अनन्त **मन** उसे देखता है, और जब हम इस तरह से किसी भी कठिनाई चाहे वह कैसी भी हो, के लिए प्रार्थना करते है, हम अपने आपको कभी भी उसी स्थिति में नहीं पाते अपितु हम आगे बढ़ते हैं और अवस्थाएँ अपने आप ठीक हो जाती है। यह भ्रमण एक कभी भी न भूलने वाला अनुभव था उसने मुझे अधिक दृढ़ बनाने की ओर अग्रसर किया।

अब जब मुझे अपना कैमरा एक परिपूर्ण फिल्माँकन देखते हुए केन्द्रित करना होता है, मैं अक्सर उस दृष्टिकोण के बदलाव को, जो मुझे अनुभव हुआ था, याद करता हूँ जब मैंने अपना लॉस एँजलिस का भ्रमण शुरू किया था। और बढ़िया चीज यह है कि अब मैं यह देखता हूँ कि हम सब इस तरह की विचारधारा अपने जीवन के हर पहलू में प्रयोंग में ला सकते हैं, चाहे हमारी चिन्ताएँ कैसी भी हों।

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.